दंगे से मुजफ्फरनगर के गुड़ बिजनेस की मिठास गायब

इस इंडस्ट्री में काम करने वाले वर्कर्स हिंसा के डर से यहां से चले गए हैं। इससे गुड़ बिजनेस बंद होने की कगार पर है

[ईटी ब्यूरो *मुंबई*]

पेराई सीजन शुरू होने से पहले मुजफ्फरनगर में सांप्रदायिक हिंसा के बाद गन्ना किसानों का मन खराब हो गया है। इस एरिया में गुड़ का काफी बिजनेस होता है। इस इंडस्ट्री में काम करने वाले वर्कर्स हिंसा के डर से यहां से चले गए हैं। इससे गुड़ बिजनेस बंद होने की कगार पर है।

मुजफ्फरनगर देश में गुड़ का सबसे बड़ा मार्केट है। देश के कुल गुड़ प्रोडक्शन में इसकी हिस्सेदारी 20 फीसदी है। कुछ ट्रेडर्स का कहना है कि मुजफ्फरनगर के पास शामली एरिया में सांप्रदायिक तनाव के चलते बिजनेस पर काफी असर पड़ा है। गुड़ बिजनेस से ज्यादातर मुस्लिम जुड़े हुए हैं। इनमें से ज्यादातर वर्कर्स हिंसा के डर से यहां से दूसरी जगह चले गए हैं।

गुड़ ट्रेडर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट अरुण खंडेलवाल ने बताया, 'हमें नहीं पता कि आगे हालात कैसे होंगे? भरोसे पर सवालिया निशान लग गया है। गुड़ यूनिट ऑपरेटरों को अपनी सुरक्षा का डर सता रहा है।' इस एरिया में 11 चीनी मिलें हैं वहीं, गुड़ यूनिट्स की संख्या करीब 4,000 है। मुजफ्फरनगर मंडी में गुड़ के सबसे बड़े ट्रेडर्स में से एक ने कहा, 'गुड़ बनाने, फैक्ट्री चलाने और उसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के काम में 85 फीसदी मुस्लिम वर्कर्स लगे थे।

उन्होंने सांप्रदायिक हिंसा के बाद हिंदू फैक्ट्री ओनर्स के लिए काम करने से मना कर दिया है। मुस्लिमों की गुड़ यूनिट्स भी बंद हैं। उन्होंने हिंदुओं के साथ भी गुड़ का ट्रेड करने से मना कर दिया है।'

मुजफ्फरनगर एरिया में 11 चीनी मिलें हैं वहीं, गुड़ यूनिट्स की संख्या करीब 4,000 है। इस बिजनेस से ज्यादातर मुस्लिम जुड़े हुए हैं। इनमें से ज्यादातर वर्कर्स साप्रांदायिक हिंसा के डर से यहां से दूसरी जगह चले गए हैं। इससे बिजनेस को नुकसान पहुंचा है

एक ट्रेडर ने बताया कि अभी 80,000 टन गुड़ बिकने के लिए तैयार पड़ा है। खंडेलवाल ने कहा, 'अक्टूबर से नया सीजन शुरू होगा। तब हमारे पास इस सीजन का 80,000 टन गुड़ होगा।' उन्होंने बताया कि गुड़ की यूनिट्स चलाने वाले ज्यादातर लोग पुणे शिफ्ट कर रहे हैं। वह गुड़ बिजनेस का नया अड्डा बन रहा है। गुड़ की ज्यादातर यूनिट्स यूपी, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हैं।

एक ट्रेडर ने बताया, 'हमारा ज्यादातर बिजनेस पहले ही इन एरिया में शिफ्ट हो रहा था। इन जगहों पर चीनी मिलें नहीं हैं। इसलिए गन्ना आसानी से मिल जाता है। मुजफ्फरनगर में सांप्रदायिक हिंसा के बाद अब वर्कर्स भी इन जगहों पर जाने की योजना बना रहे हैं। यहां की गुड़ यूनिट्स को वर्कर्स की जबरदस्त कमी हो सकती है।'

दो बड़े गुड़ ट्रेडर्स ने यह भी कहा कि मुजफ्फरनगर में बनने वाले गुड़ की क्वालिटी भी खराब हो सकती है। इनमें से एक ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया, 'यहां मुस्लिम वर्कर्स गुड़ प्रोडक्शन की असली ताकत हैं। हमारी क्वालिटी अभी बहुत अच्छी है।

शामली एरिया में मुस्लिम और पिछड़े वर्ग के हिंदू वर्कर्स का पता नहीं लग पा रहा है। उन्हें इन यूनिट्स में काम के लिए मनाकर वापस लाना आसान नहीं होगा।' वहीं, दूसरे ट्रेडर ने बताया, 'कोई पर्सनल लेवल पर ऐसा कर सके तो करे, लेकिन दोनों समुदायों के बीच भरोसा टूट चुका है।' मुजफ्फरनगर में गुड़ इंडस्ट्री का वजूद लंबे समय से है। पिछले 3 साल में गन्ने की ज्यादा कीमत और दूसरी जगहों से चुनौती मिलने के चलते मुजफ्फरनगर मार्केट को हर रोज 400 रुपए प्रति क्विंटल का लॉस हो रहा है। अभी 40 किलो गुड़ की कीमत यहां 1,150 रुपए है।

Economic Times

20/9/13